A-PDF Image To PDF Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

बाल-सखा

सचित्र मासिक पत्र

भाग १२

१९२८

सम्पादक
श्रीनाथसिंह

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग
वार्षिक मूल्य २॥) रुपये

BALSAKHA—Registered No. A 794

इंडियन परफ्यूमरी

के

तरह तरह के उत्तम पवित्र और सुगन्धित पदार्थ

यदि आप स्वदेशी पवित्र सुगन्धित वस्तुओं का आनन्द लूटना चाहते हैं तो नित्य के व्यवहार के लिए विशुद्ध, अकृत्रिम, अत्यन्त मनोमोहक, ताज़े फूलों की जैसी सुगन्धवाले बेला, चमेली आदि के मनोहर केश-तेल, मोतिया, ख़स आदि के इत्र, मंजन तथा केवड़ा, गुलाबजल यहाँ से ख़रीदिए।

हमारे यहाँ रासायनिक प्रक्रिया-द्वारा माल तैयार होता है।

व्यापारियों के साथ विशेष रियायत

नियम मँगाइए

मैनेजर, इंडियन परफ़्यूमरी नं० ८, पार्क रोड, इलाहाबाद

Yearly Subscription, Rs. 2-8-0.
वार्षिक मूल्य २॥)

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

5 as. per copy.
प्रति संख्या ।=)

Printed and published by K. Mittra, at the Indian Press, Ltd., Allahabad.
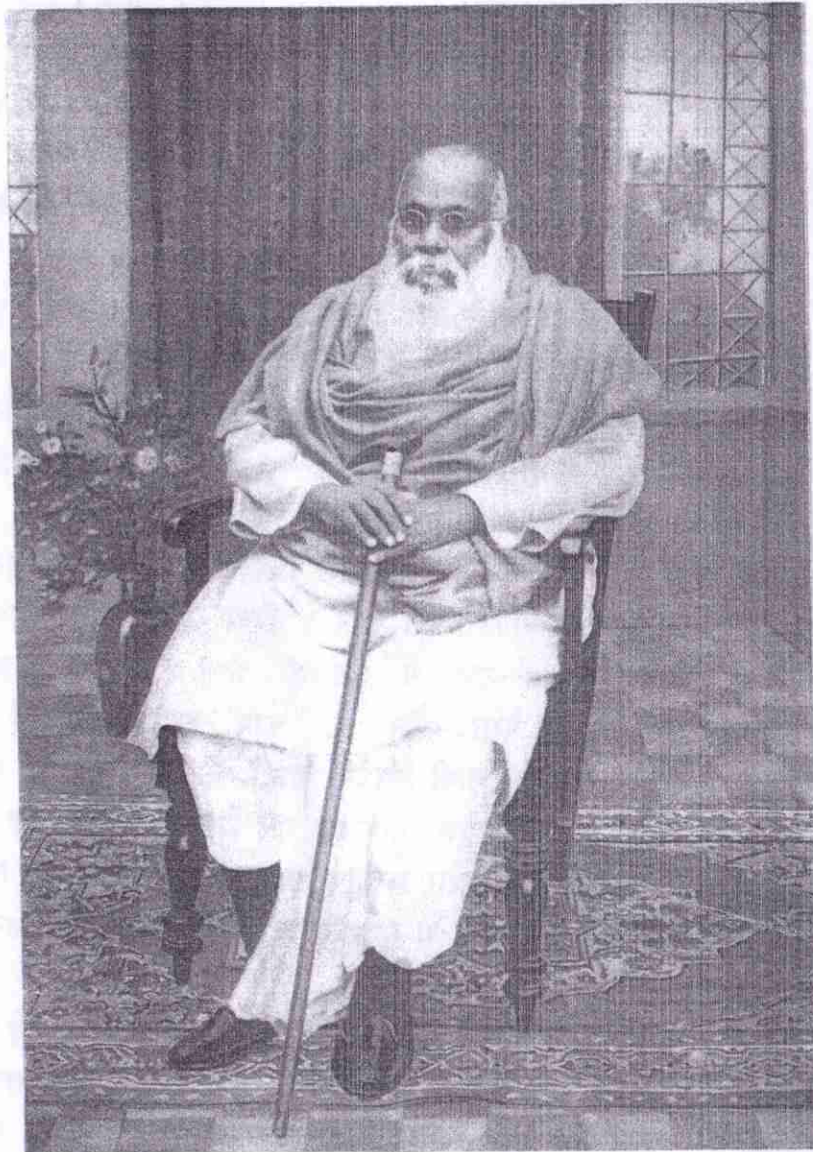
स्वर्गीय बाबू चिन्तामणि घोष
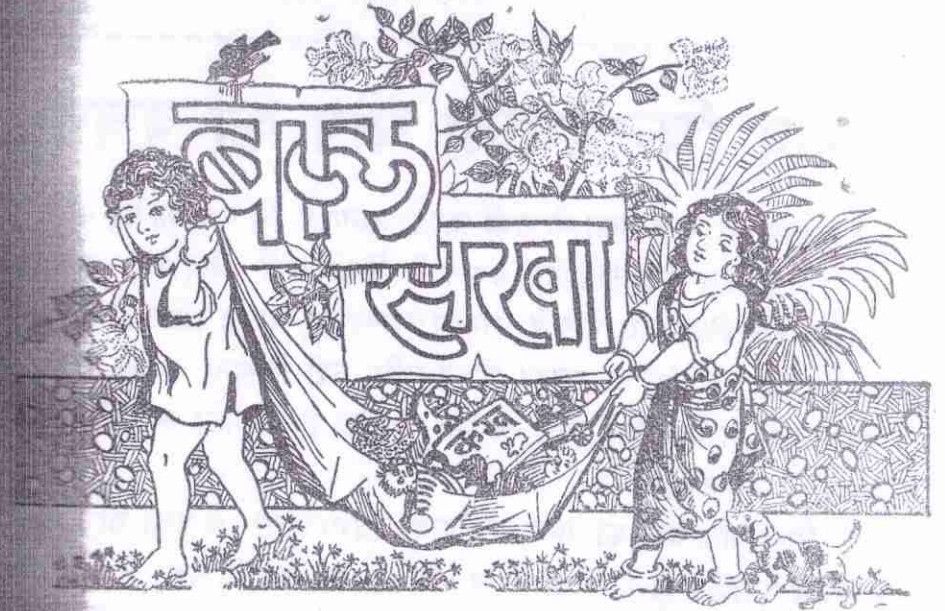
२] सितम्बर १९२८—भाद्रपद १९८५ [संख्या ९

श्याम !

हँस कर बोलने की बातें कहे कौन अब,
डाल दृष्टि देखने में जब सकुचाते हो।
दूर दूर रह कर दूर सदा किये रहो
ऐसी क्यों उपेक्षा नाथ निठुर दिखाते हो।
मान किया होता यदि छूट जाता अब तक
अपने को भक्त-वश तुम्हीं तो बताते हो।
ऐसे व्यवहार का न भेद पाया ढूँढ़ थका
कहूँगा यही कि श्याम नाहक सताते हो।

देवीदत्त शुक्ल

बाबू चिन्तामणि घोष का बचपन

यह तो बाल-सखा के सभी पाठक जानते हैं कि बच्चों का यह मासिक पत्र इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग से निकलता है और उस छापेख़ाने के मालिक बाबू चिन्तामणि घोष थे जिनका देहान्त गत अगस्त महीने की ११ तारीख़ को हुआ है। मैं यहाँ पर उनका जीवन-चरित नहीं लिखना चाहता; मैं तो उनके बचपन की दो एक ऐसी बातें लिखना चाहता हूँ जिनको अमल में लाने से औरों का भी उपकार हो।

चिन्तामणि बाबू का जन्म बालीग्राम (उत्तरपाड़ा) में हुआ था। यह गाँव कलकत्ते के समीप ही है। वहाँ पर वे पाँच वर्ष की उम्र में, पढ़ने के लिए, मास्टर के सुपुर्द किये गये। मास्टर से उनकी माता ने यह शर्त कर ली कि बच्चे को प्रत्येक अक्षर सिखाने के लिए उन्हें एक एक रुपया दिया जायगा। उनकी माता ने यह समझा होगा कि इस काम में बच्चे को महीनों लग जायँगे; किन्तु उन्हें और साथ ही मास्टर को भी उस समय बड़ा अचरज हुआ। जब उन्होंने देखा कि नन्हें से बच्चे ने दो ही दिन में पूरी वर्णमाला याद कर ली। चिन्तामणि बाबू को, स्कूल में पढ़ने के लिए, छः सात वर्ष का ही समय मिला; क्योंकि जब ये बारह वर्ष के थे तभी इनके पिता बाबू माधवचन्द्र घोष का प्रयाग में देहान्त हो गया। घर में रह गईं मा और दादी। इन्होंने जैसे तैसे बच्चे को और बरस-छः महीने तक मदरसे भेजा। इस बीच में इन्होंने जिन मास्टरों से पढ़ा, वे सभी इनकी समझदारी और पैनी बुद्धि देखकर यही कहते थे कि यह लड़का जीता-जागता रहेगा तो ज़रूर बड़ा आदमी होगा।

जब बारह तेरह वर्ष की उम्र में चिन्तामणि बाबू को निर्वाह की कठिनाई के कारण मदरसा छोड़कर, मन न रहने पर भी, नौकरी करनी पड़ी तब स्कूल छोड़ने का उन्हें बड़ा दुःख हुआ। क्या करते, नौकरी करने लगे; परन्तु स्कूल का पढ़ना छोड़ देने पर भी उन्होंने घर पर पढ़ना नहीं छोड़ा। वे दूसरों से पुस्तकें माँग लाया करते और बड़े ध्यान से पढ़ा करते थे। यदि दोपहर को कुछ खाने के लिए माताजी उन्हें पैसे दो पैसे दे देतीं तो उन पैसों को वे ख़र्च न करके अपने पास जमा करते जाते और दो चार आने एकत्र होते ही वे पुरानी किताबें बेचनेवाले फेरीवाले से कोई अच्छी सी पुस्तक ले लेते थे। इस प्रकार वे अपने पढ़ने के सिलसिले को जारी किये रहे। आप जानते हैं कि उन्हें किस तरह की पुस्तकें बहुत पसन्द थीं? क़िस्से-कहानी अथवा उपन्यास वग़ैरह उनको बहुत पसन्द न थे। वे तो संसार के नामी पुरुषों के जीवन-चरितों को बड़ी लगन के साथ पढ़ते थे और बारीकी के साथ यह देखते थे कि वह आदमी क्या करने से इतना बढ़ सका कि उसका नाम हो गया और उसका जीवन-चरित लिखा जा सका। उस पुरुष के जिस गुण को वे सीख सकते उसको सीखने की जी-जान से कोशिश करते थे। साथ ही इस धुन में लगे रहते थे कि मैं ऐसा कौन सा काम करूँ जिससे मैं भी बड़ा आदमी हो सकूँ। लगातार नामी गिरामी लोगों के जीवन-चरित पढ़ते पढ़ते चिन्तामणि बाबू में बहुत से ऐसे गुण आ गये जिनसे उनके उच्च चरित्र के उन्नत होने में सहायता मिली और सचमुच एक दिन ऐसा आया कि उनका मनोरथ सफल होगया। भारत के सुदूर स्थानों में भी उनका और उनके छापेख़ाने का नाम मशहूर हो गया।

आप जानते हैं कि उन्होंने जीवन-चरितों से क्या शिक्षा ली? बड़े आदमियों की जीवन-घटनाओं से उन्होंने यह सीखा कि उन्नति करने के लिए सच बोलना ज़रूरी है। भला कोई झूठा आदमी नामी हो सकता है? उन्होंने सीखा कि नामी आदमी होने के लिए ठीक समय पर काम करना लाज़िमी है; इसलिए वे आज का काम कल के लिए नहीं टालते थे। "कालिह करै सो आज कर,

आज करै सो अब" उनका मूल मन्त्र था। काम छोटा हो या बड़ा, तुच्छ हो या महत्, उसे वे जी जान से करते थे। भरसक दूसरे की सहायता करना उन्होंने जीवन-चरितों से ही सीखा और उसका प्रयोग उन्होंने पायोनियर छापेखाने की नौकरी से आरम्भ किया। तीक्ष्ण बुद्धि होने से वे अपना नियत काम दफ़्र में औरों की अपेक्षा जल्दी कर लेते थे और जो समय बच जाता था उसको सुस्ती में न गवाँकर अपने साथी बाबुओं का काम कर देने में लगाते थे। इससे उनको दुहरा लाभ हुआ। एक तो अपने साथी बाबू लोगों के वे प्रिय-पात्र हो गये; दूसरे उनको दफ़्र के कई काम सीखने का अवसर मिल गया। सादगी भी उन्होंने जीवन-चरितों से ही सीखी थी। सबसे सरलता से मिलते थे। उनके बर्ताव से क्या मजाल जो कोई यह भाँप ले कि इनके यहाँ पाँच-छः सौ आदमी काम करते होंगे और ये लखपती हैं। सादी धोती और सादी कमीज़ से काम लेते थे। तड़क-भड़क से कोसों दूर रहते थे। यह नहीं कि सम्पत्ति मिली है तो जी भर कर शौक़ कर लो। शौक़ था तो दूसरों के काम आने का, चुपचाप भलाई करने का और आफ़त में फँसे हुए लोगों को सहारा देने का। उनकी इस रुचि के प्रमाण तो अब साकार मौजूद हैं; नहीं तो पहले बहुत कम लोगों को पता था। उनकी यह तासीर थी कि हज़ारों तक दे डालते थे और किसी को पता न लगने देते थे।

ऐसे बहुत से गुण, जिन्होंने आगे चलकर उन्हें बड़ा आदमी बनाया, उन्होंने महत् पुरुषों के जीवन-चरितों से ही सीखे थे। यदि वे जीवन-चरितों को क़िस्से-कहानी की तरह पढ़कर भूल जाया करते, उनसे कुछ उपदेश न लेते तो यही होता कि वे दफ़्र के बड़े बाबू होकर क़लम रगड़ते रहते और पेंशन लेकर साधारण मनुष्य का जीवन बिताते।

चिन्तामणि बाबू के चरित्र पर उनकी कर्त्तव्यनिष्ठ माता की छाप पड़ी हुई थी। बात यह थी कि उनके पिता तो कमसरियट की नौकरी के कारण इधर-उधर रहा करते थे; घर में दादी और माता ही रहती थीं, इस कारण वे ही बालक को अच्छे मार्ग पर चलाने का ध्यान रखती थीं। फिर जब वे देश छोड़कर काशीजी गये तो पिता का, शीघ्रही, देहान्त हो गया। इससे माता और पिता दोनों का कार्य मा और दादी ने ही किया। एक घटना से आप समझ जायँगे कि चिन्तामणि बाबू अपनी मा की बात को कहाँ तक मानते थे। चिन्तामणि बाबू के पिता माधव बाबू को ताश खेलने का बहुत शौक़ था। बहुतों को होता है। इस खेल में वे अपना धन भी बर्बाद कर चुके थे। इस कारण मा ने चिन्तामणि बाबू को आज्ञा दे रक्खी थी कि कभी ताश न खेलना। इस आज्ञा का पालन उन्होंने ज़िन्दगी भर किया और पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि ७४ वर्ष की लम्बी उम्र में उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि ताश का खेल किस तरह खेला जाता है।

इनकी माता जिस समय विधवा हुई उस समय उनकी उम्र अधिक नहीं थी। उनके कुल दो बच्चे थे; बड़ी लड़की और छोटे चिन्तामणि बाबू। गृहस्थी की दशा अच्छी न थी। कुछ क़र्ज़ भी था। इस दशा में चिन्तामणि बाबू को व माता और दादी को उनके मामा ने देश में इसलिए बुला भेजा कि वहाँ पर ये लोग आराम से रहेंगे। वे सम्पन्न थे किन्तु इनकी माता और दादी ने वहाँ जाना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने सोचा कि भले ही सगे भाई का घर है और वहाँ खाने-पीने की कोई असुविधा न रहेगी; फिर भी है तो पराया घर। वहाँ स्वाधीनता कहाँ? ऐसी दशा में हमारे बच्चे को कहीं पराये भरोसे रहने की आदत न पड़ जाय। इसलिए उन्होंने मुसीबतों का दृढ़ता से सामना किया; अपना सामान बेचकर क़र्ज़ चुकाया और पराये बोझ न बनकर बड़ी मेहनत से गृहस्थी सँभाली और बालक चिन्तामणि के चित्त पर कर्त्तव्य की ऐसी छाप लगाई कि वे सचमुच चिन्तामणि होगये। जो एक दिन स्वयं दीन थे उन्होंने बहुतेरों को सहायता दी, लोगों को अनेक कष्टों से बचाया; जिन्होंने एक दिन लाचारी से मदरसा छोड़ा था उन्होंने दूसरों को मदरसे में भर्ती होने में सहायता दी और ज्ञान अर्जन की, इतनी सामग्री सञ्चित करने में सहायक बने जिससे लोगों का मुद्दत तक उपकार होता रहेगा।

लल्लीप्रसाद पाण्डेय

लामदाना के लद्दू

लामदाना[१] के लद्दू[२] पैछे में चाल
पैछे में चाल—दो पैछे में आठ
लामदाना के ललुआ[३] पैछे में चाल
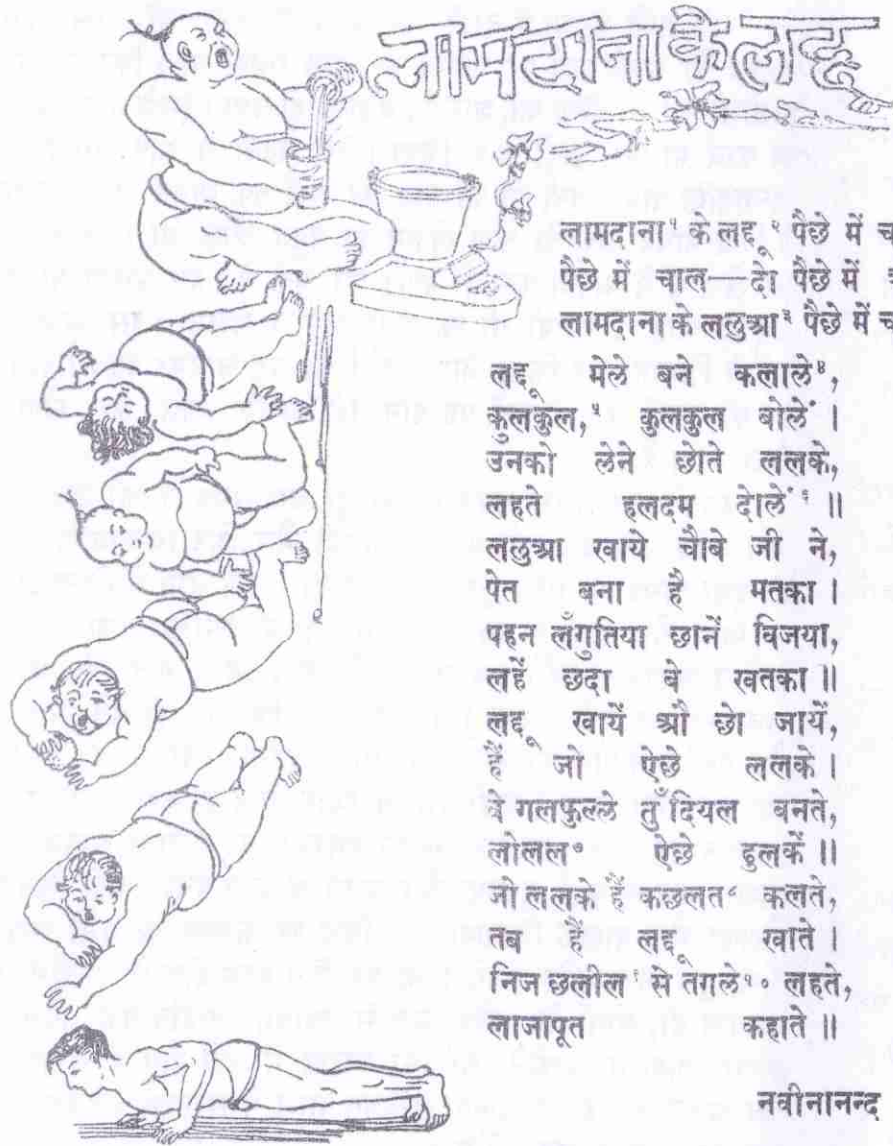
लद्दू मेले बने कलाले[४],
कुलकुल,[५] कुलकुल बोलें।
उनको लेने छोते ललके,
लहते हलदम दोलें[६] ॥
ललुआ खाये चौबे जी ने,
पेत बना है मतका।
पहन लँगुतिया छानें विजया,
लहें छदा वे खतका ॥
लद्दू खायें औ छो जायें,
हैं जो ऐछे ललके।
वे गलफुल्ले तुँदियल बनते,
लोलल[७] ऐछे ढुलकें ॥
जो ललके हैं कछलत[८] कलते,
तब हैं लद्दू खाते।
निज छलील[९] से तगले[१०] लहते,
लाजापूत कहाते ॥

नवीनानन्द

१—रामदाना। २—लड्डू। ३—लड्आ। ४—करारे। ५—कुरकुर। ६—
७—रोलर। ८—कसरत। ९—शरीर। १०—तगड़े।

अँगुलियों से सुनना

अन्धे लोग आँखों का काम हाथ से लेते हैं। टटोलते टटोलते वे जहाँ चाहते हैं चले जाते हैं। किसी चीज़ को उनके हाथ में दे दीजिए। छूकर फ़ौरन बता देंगे कि क्या है? अब सवाल यह है कि क्या बहरे लोग हाथ से छूकर सुन सकते हैं? क्या आदमी की आवाज़ भी टटोल कर पहचानी जा सकती है? अमरीका का एक विद्वान् इस सवाल के जवाब देने का उपाय कर रखा है। उसका कहना है कि हम अपनी ज़िन्दा खाल से कोई भी आवाज़ ... समझ सकते हैं?
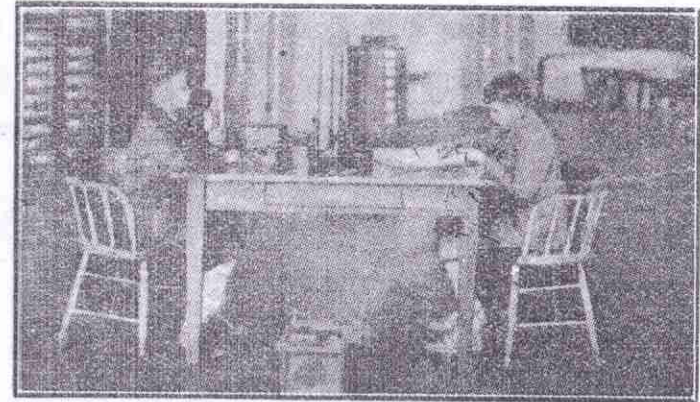
एक लड़का बोल रहा है और दूसरा अपनी अँगुलियों से सुन रहा है।

इस बात को और अच्छी तरह समझने के लिए हमें यह जान लेना चाहिए कि आदमी सुनता कैसे है? पानी में कुछ चीज़ फेंक देने से जैसे लहर उठती है वैसे आदमी के बोल से या किसी तरह की आवाज़ होने से हवा में लहरें उठती हैं। ये लहरें जब हमारे कानों से टकराती हैं तो हमें आवाज़ सुनाई पड़ती है। जिनके कान बिगड़ जाते हैं उनको आवाज़ सुनाई नहीं पड़ती।

पर टकराती उनके कान से भी है। कान ही से नहीं तमाम शरीर से टकराती है। जैसे शरीर में हवा के झोंके लगते हैं वैसे ही आवाज़ के झोंके भी लगते हैं। पर ये झोंके इतने कमज़ोर होते हैं कि हमें मालूम नहीं होते।

अँगूठे से सुनने का यन्त्र
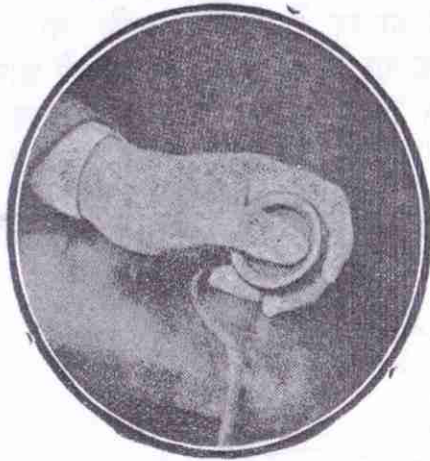
अमरीका के उस विद्वान् ने टेलीफ़ोन की तरह एक यंत्र बनाया है। इस यंत्र का नाम उसने टेली टैक्टर रखा है। इसमें दो यंत्र होते हैं। एक सिरे पर चोंगा रहता है जिसमें आदमी बोलता है और दूसरे सिरे पर एक डिब्बा रहता है जिस पर सुननेवाला अँगूठा और अँगुलियाँ लगा कर बैठता है। इस यंत्र में बिजली के ज़ोर से आवाज़ की लहरें डिब्बे पर टकराती हैं और जो डिब्बे पर हाथ रखते हैं उनके हाथ में भी मालूम होती हैं। इस तरह अँगूठे
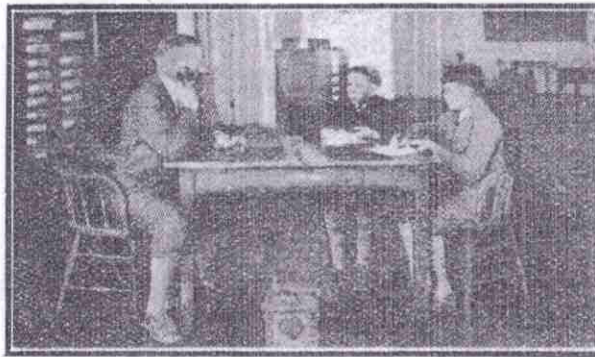
मास्टर बोल रहा है लड़के अँगुलियों से सुनकर लिख रहे हैं। वे यह भी देखते जाते हैं कि मास्टर के होठ किस तरह हिलते हैं।

अँगुलियों से वह पहले अक्षर फिर शब्द और फिर बड़े-बड़े वाक्य समझने लगता है।

पहले एक यंत्र बना था, जिसमें सिर्फ़ अँगूठों से सुना जाता था। अब दूसरा यंत्र बना है। इसमें अँगूठा और अँगुलियाँ दोनों की सहायता से आवाज़ मालूम की जाती है। आवाज़ में पाँच तरह की लहरें होती हैं। इस यंत्र से वे छनकर पाँच हिस्सों में बँट जाती हैं। हर एक तरह की लहरें अलग अलग होकर पाँचों अँगुलियों में पहुँचती हैं। इस तरह उनके समझने में बड़ी आसानी होती है।
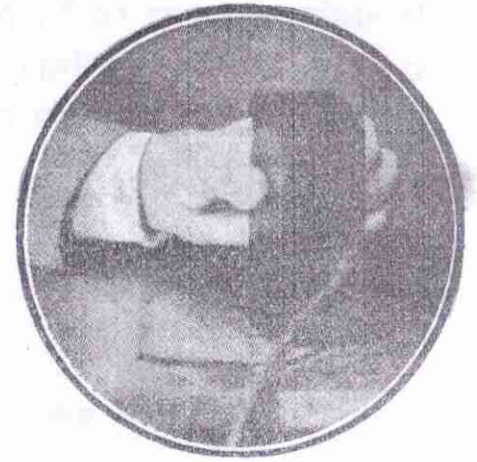
अँगूठा और अँगुलियों से सुनने का यन्त्र

इस यंत्र बनानेवाले ने पहले दो बहरे लड़कों पर इसका प्रयोग किया। दो वर्ष में दोनों बालक कुछ समझने लगे। मई १९२६ में उन्होंने पहले पहल
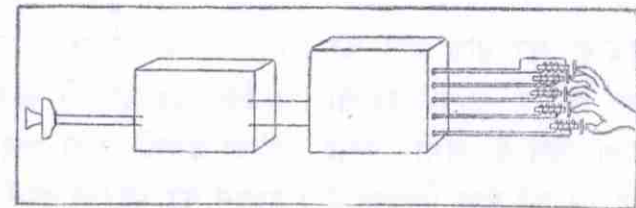
आवाज़ छनकर अँगुलियों में कैसे पहुँचती है?

२५० शब्दों की एक कहानी एक हाथ से सुनी और दूसरे से लिख दी। अब यह सिद्ध हो गया कि इस प्रकार बहरे लड़कों को भाषा का ज्ञान कराया जा सकता है। इस यंत्र के बनानेवाले का यह भी कहना है कि हाथ से सुनते

समय यदि बहरे बोलनेवाले के होठों का हिलना देखते रहें तो उन्हें यह मालूम हो जायगा कि कौन सा शब्द कहने में होंठ किस तरह हिलते हैं ? इस तरह कुछ दिन में वे अभ्यास से सिर्फ़ होठों का हिलना देखकर भी समझ सकते हैं कि बोलनेवाला क्या कह रहा है। यह यंत्र अभी हाल ही में बना है पर यह बड़े काम का है और टेलीफ़ोन की तरह इससे भी संसार का बड़ा उपकार होने की आशा है। बहरे और गूँगों का तो इससे जो उपकार होगा उसका कुछ कहना नहीं।

सत्यप्रकाश विशारद, एम० एस-सी०

क़लम की कहानी

है मेरी अति करुण कहानी। वही मुझे है यहाँ सुनानी ॥
मैंने बहुत कष्ट है पाया। इससे सूखी मेरी काया ॥
मुझे लोग जंगल से लाते। मात पिता से साथ छुड़ाते ॥
मेरा सुन्दर रंग मिटाते। काला और कुरूप बनाते ॥
चाकू से फिर शीश काट कर। मेरी जीभ छेदते हैं नर ॥
आगे क्या दूँ अधिक हवाला। आख़िर मुँह कर देते काला ॥
किन्तु भुला ये सभी बुराई। करती उनकी सदा भलाई ॥
प्रतिदिन नये लेख लिखती हूँ। दुश्मन का भी हित करती हूँ ॥

सोहनलाल द्विवेदी

हमारे पड़ोस के सबसे दिलचस्प आदमी*

महाशय मुन्शीराम हमारे मुहल्ले में रहते हैं। और हमारे ही दफ़्तर में कोई पाँच वर्ष से दफ़्तरी का काम कर रहे हैं। सब उनको भगतजी कहते हैं। ये एक अजीब आदमी हैं। एक बार किसी स्त्री ने आपकी शान्त तथा गम्भीर सूरत देखकर कह दिया कि "आप तो बड़े सीधे साधे पुरुष हैं अपने भाई भौजाई की बहुत सेवा करेंगे।" इस पर आप तिलमिला उठे!

भगतजी दौड़े जा रहे हैं

[illegible] दिन यह भीष्म प्रतिज्ञा कर ली कि सारी आयु किसी स्त्री से विवाह न करूँगा। आप अपनी प्रतिज्ञा के सच्चे रहे, इसी कारण लोग उनको भक्तजी और हम भीष्मजी कहते हैं।

ये सिर पर गाँधी टोपी, बदन पर एक कुर्त्ता और पाजामा या धोती के सिवाय और कुछ नहीं पहनते।

* अगस्त के बाल-सखा में दिये गये एक प्रश्न का उत्तर।

एक बार जब आप दफ़्र में आने को तैयार हो रहे थे। किसी ने कह दिया कि एक घण्टा देर होगई है। बस फिर क्या था सीधे उलटे कपड़े पहन कर दौड़े। भाग्यवश पाजामे का नाल पीछे की ओर बँध गया। इतना ही नहीं बल्कि पृथ्वी पर लटकता रहा। जब लालाजी (पिताजी) के सम्मुख आकर खड़े हुए तो इनका विचित्र स्वाँग देख कर सब लोग हँस पड़े। अब आपको ध्यान आया कि क्या बात है। घबड़ा कर लालाजी से कहने लगे, "छमा करियेजी बाबूजी कोठरी मां अँधेरा होत था सीधे उलटे की जाँच न पड़ी।"

पहले आपके लम्बी दाढ़ी हुआ करती थी। एक बार दफ़्र में एक मदरासी एजंट आगये। भीष्मजी को उनकी सेवा के लिए नियुक्त किया गया। उनकी बोली को तो यह समझते ही नहीं थे केवल इशारे से काम चलता था। एक बार एजंट महाशय नाई को बुलवाना चाहते थे। अतएव अपनी दाढ़ी और सर पर हाथ फेरा।

ये बिचारे उलटा समझे। जाकर अपनी ही दाढ़ी और सिर के बालों पर उस्तरा फिरवा डाला। और उनके सम्मुख आकर खड़े हो गये।

वैसे आप अनोखी समझ रखते हैं दूसरे को शिक्षा देने में नहीं चूकते। एक बार हमारे चाचाजी के कोट पर लिखते हुए स्याही का धब्बा गिर पड़ा। आप खड़े देख रहे थे। तुरन्त भाग कर एक पानी का लोटा भर लाये और एक-दम उनके कोट पर उलट दिया और बोले, "इसका धब्बा गिला गिला छुट जा तो छुट जा नहीं तो फिर इसे छुटना नहीं चार पाँच रुपये का कोट यूहीं ख़राब हो जायगा। ज़रा सम्भाल कर लिखे कर बाबूजी।"

यदि समीप खड़े लोग हँस न पड़ते तो भीष्मजी पर खूब झाड़ पड़ती। अब चाचाजी हँसते हुए कुछ कहते हुए खड़े होगये।

आपकी एक चतुराई और विख्यात है। एक बार इन्हें ज्वर चढ़ गया तो चुपके से दवाई की पाँचों खुराक़ पी डालीं। जब पूछा कि यह क्यों किया तब बोले "तू मेरे से बच्चों का खेल करावे एक मुताजमां तो हलक़ भी गीला नहीं होन्दा आधा गलास तो दवा भी नहीं थी।"

नन्दकिशोर, अम्बाला

दीन किसान

तेरा दुःख बटाऊँगा मैं,
दुखी न हो हे दीन किसान।
तुझको सुखी बनाऊँगा मैं
दुखी न हो हे दीन किसान॥
तू भी है भारत सन्तान।
दुखी न हो हे दीन किसान॥

जग को अन्न-दान करता जो
भूख प्राणियों की हरता जो
औरों का है घर भरता जो
नहीं मुसीबत से डरता जो
वह तू है या है भगवान।
दुखी न हो हे दीन किसान॥

कपड़े फटे पेट हैं खाली,
उस पर सर्दी वर्षा घाम,
काम रात दिन करता फिर भी
देता दुनिया को आराम
सचमुच तू है पूज्य महान।
दुखी न हो हे दीन किसान॥

तू स्वदेश का है प्रिय माली।
तुझसे है भारत में लाली॥
मेरा पेट भले हो खाली
पर तेरी होगी रखवाली
तेरे हित दे दूँगा प्रान
दुखी न हो हे दीन किसान

सुन्दरलाल द्विवेदी

एक फूल जो खिलने नहीं पाया

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक लाला सन्तराम बी० ए० को बाल-सखा के पाठक खूब जानते होंगे। आप बड़े मिलनसार हैं, शान्तहृदय हैं और हमेशा खुश रहते हैं। हिन्दू जाति और हिन्दी भाषा की सेवा करना आपके जीवन का मुख्य उद्देश है। आपके एक बड़ा प्यारा पुत्र था जिसका नाम वेदव्रत था। वेदव्रत बड़ा ही होनहार था। पर खेद है कि अब वह इस संसार में नहीं रहा।

वेदव्रत का जन्म १८ कार्त्तिक संवत् १९६८ वि० में होशियारपुर ज़िले के एक गाँव में हुआ था। इसके पालन-पोषण और पढ़ाई-लिखाई का संतरामजी को बड़ा खयाल था। तमाम पंजाब के स्कूलों में उर्दू पढ़ाया जाता है पर वेदव्रत की पढ़ाई हिन्दी में शुरू हुई थी। इससे इस बालक को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था।

अप्रैल १९२८ में नवीं कक्षा पास करके वेदव्रत दसवीं में पहुँचा ही था कि ७ मई को अचानक स्कूल में ही ज्वर आगया। तीसरे दिन न्यूमोनिया हो गया जिसके कारण १४ मई को इस होनहार बालक को यह संसार छोड़ देना पड़ा।

वेदव्रत बहुत कम बोलता था पर उसकी बोली बड़ी मीठी थी। लड़ना-झगड़ना या दंगा फसाद करना तो वह जानता ही न था। अपने पढ़नेवाले साथियों से सदैव प्रेम रखता था। मास्टर लोग उसकी इन आदतों से उससे बहुत खुश रहा करते थे और दूसरों से तारीफ़ किया करते थे। एक बार एक मास्टर ने वेदव्रत के विषय में रिपोर्ट देते हुए लिखा था—"यह एक शान्त और सदाचारी लड़का है।" वेदव्रत की शिकायत कभी किसी को नहीं सुनाई दी। वह बहुत बुद्धिमान् और साहसी बालक था। पढ़ने में हमेशा पहला दूसरा नम्बर रहता था, सभी विषयों में उसकी एक-सी और अच्छी रुचि देखी गई।

स्वर्गीय बालक वेदव्रत

हिन्दी से उसे इतना प्रेम था कि उर्द पढ़ने पर भी वह प्रश्न-पत्रों का उत्तर हिन्दी ही में देता था। परीक्षक हिन्दी न जानने के कारण उसी को बुलवा कर उसके उत्तर सुनते थे और नम्बर देते थे। बचपन से ही वह 'बाल-सखा' का प्रेमी था। कुछ वर्ष हुए उसकी 'अमृतफल' शीर्षक एक कहानी भी 'बाल-सखा' में प्रकाशित हुई थी। रसायन-विद्या से संबंध रखनेवाले अम्ल और क्षार बहुत से पदार्थ रखके अपने घर में उसने एक छोटी सी प्रयोगशाला बना रक्खी थी। उसमें वह गैसें आदि तैयार किया करता था। बढ़ईगीरी के सब औज़ार उसके पास थे। घर के छोटे मोटे सब काम वह खुद कर लिया करता था।

जीव-जन्तुओं के बारे में जानने की उसकी बहुत रुचि थी। शहद की मक्खी के छत्ते से शहद निकालना उसका एक मन-भाता खेल था। छत्ते का पता लगाने के लिए अक्सर वह फूल पर बैठी हुई शहद की मक्खी को पकड़ लेता था और उसके पिछले भाग में एक पतला सा डोरा बाँध कर छोड़ देता था। मक्खी जिधर उड़कर जाती थी धागे की निशानी से वह भी उसके पीछे जाकर छत्ते पर जा पहुँचता था।

वेदव्रत को जिस प्रकार पढ़ने-लिखने का खयाल था उसी प्रकार शरीर का बल बढ़ाने की ओर भी उसकी पूरी रुचि थी। खेलों आदि में बराबर साथियों में शरीक होता था। १५ वर्ष की आयु में ही गदका, फरी, लाठी, तैरना और साइकिल चलाना आदि अच्छी तरह सीख लिया था। सेवा-भाव तो उसके हृदय में कूट कूट कर भरा था। वह पूरा स्काउट था। स्काउटिंग के कई इम्तिहान उसने पास किये थे। "आघातों की प्रारम्भिक चिकित्सा" का सर्टिफिकेट भी उसने प्राप्त किया था। बड़ों की आज्ञा-पालन करना, कभी किसी को गाली न देना, धोखा न देना, सच ही बोलना, सबसे मिल कर चलना आदि गुण उसमें न मालूम कहाँ से शुरू से ही मौजूद थे।

खेलों में उसका एक खेल यह भी था कि देश-विदेश के नये-पुराने टिकट इकट्ठे

करना। न मालूम उसने इस प्रकार कितने टिकट इकट्ठे कर लिये थे। घूमने का भी वेदव्रत को कम शौक न था। अपने अन्तिम समय तक उसने मथुरा, वृन्दावन, दिल्ली, आगरा, शिमला, कुल्लू, डलहौज़ी, काश्मीर आदि न मालूम कितने स्थानों की यात्रा कर ली थी। साहस और आश्चर्य की बात तो यह है कि उसने १२ वर्ष की अवस्था में सन् १९२२ में क़रीब तीन सौ मील की पैदल यात्रा की थी। यात्रा से वेदव्रत को व्यवहार-ज्ञान बहुत अच्छा हो गया था।

उसकी एक और दूर की सूझ सुनिए—जहाँ मृत्यु से तीन दिन पूर्व डाक्टर वगैरह सभी उसके अच्छे होने को कह रहे थे वहाँ वह कह रहा था—कितना ही ज़ोर लगाओ मैं बचूँगा नहीं। अपने पिता को बुलाकर कहा—मैं बचूँगा नहीं, मुझे छाती से लगा कर प्यार कीजिए। छोटी बहन गार्गी से, जिसे वह बहुत ज़्यादा प्यार करता था कहा—"गार्गी! तेरी मा सामने खड़ी मुझे बुला रही है!" वेद की माता का देहान्त उससे साढ़े तीन वर्ष पूर्व हो गया था। बालक वेदव्रत की १६ वर्ष के जीवन की घटनाएँ इस बात का पूरा प्रमाण देती हैं कि यदि वह जीता रहता तो आगे चल कर एक महान् पुरुष होता। यद्यपि आज वह हमारे बीच में नहीं है पर न मालूम अपने जीवन से कितनी बातें सिखा गया है, जिन पर यदि बालक चलें तो देश के एक रत्न बन जायँ और ला० सन्तरामजी को चारों ओर चलता-फिरता अपना प्यारा पुत्र दिखलाई दे।

विद्याभास्कर शुक्ल

प्रश्न—वह क्या चीज़ है जिसे आदमी हमेशा चाहता है पर हमेशा [illegible] करता रहता है।

उत्तर—भूख।

प्रश्न—वह कौन जानवर है जो अपनी पीठ के बल चलता है।

उत्तर—जूता।

दर्पण के साथी से

जो मैं करता सो तू करता हँसता और हँसाता है।
दर्पण के भीतर घुसने को मुझे बहुत ललचाता है॥
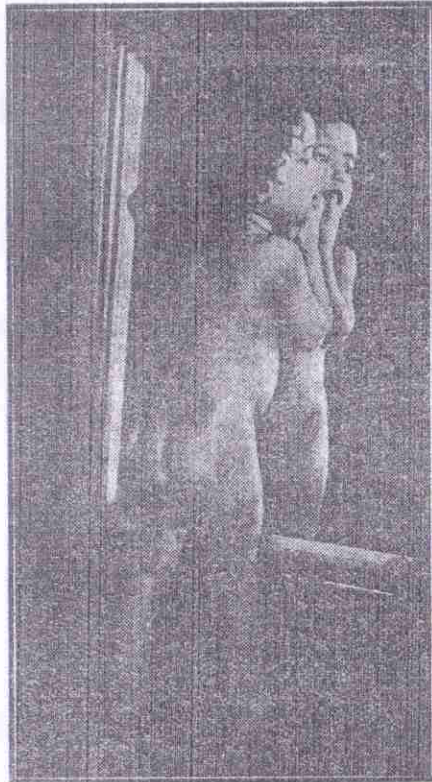
पर मैं भीतर आऊँ कैसे?
तुझे पकड़ मैं पाऊँ कैसे?
कह दे जल्दी से छल को तज।
नहीं धरा जाता है धीरज॥

किस प्रकार बाहर आएगा?
भीतर रह कर क्या खाएगा?
कुछ तो बतला भाई मेरे
माता पिता कहाँ हैं तेरे?

ओ हो मैं जो कुछ खाता हूँ।
वह तेरे कर में पाता हूँ॥
कौन तुझे दे देता खाना?
क्या न चाहता तू बतलाना॥

भेद न मैं खोलूँगा तेरा
कर विश्वास मित्र तू मेरा॥
ले कह दे कानों में प्यारे।
अरे मौन ही है क्यों धारे।

ऐसा मित्र न मैंने देखा जो इतना ललचाता है।
जो मैं करता सो तू करता क्या तू मुझे चिढ़ाता है?

'श्रीश'
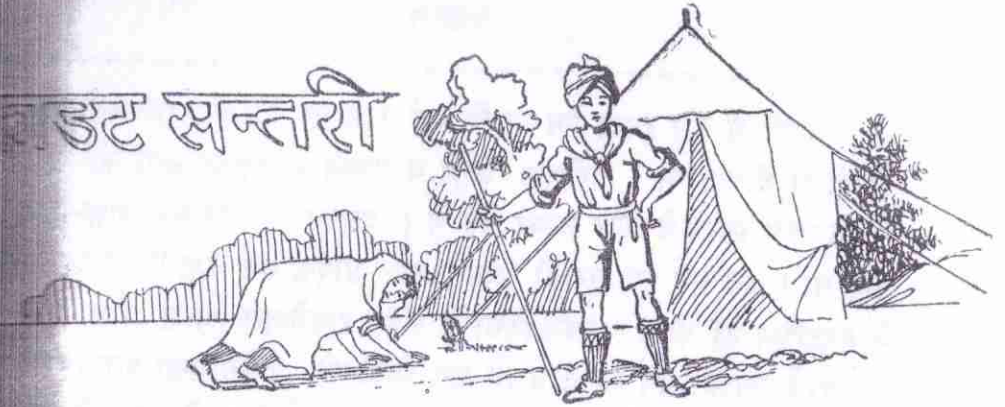
[लेखक—पण्डित श्रीराम वाजपेयी, चीफ़ स्काउट कमिश्नर]

तेजू—प्रकाश भाई, मैं सुनता हूँ कि तुमने उस दिन रात को अपने कैम्प में बड़े ज़ोरों का पहरा दिया।

प्रकाश—पहरा तो दिया; मगर तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

तेजू—भाईजी, आपके साथ में लालजी भी वनोपसेवन के लिए गये थे। उन्होंने मुझे आपके यहाँ की सब कथा सुनाई थी।

प्रकाश—कथा! कौन सी कथा?

तेजू—वही! जब आपने एक काले कुत्ते को आते हुए देख दपट कर कहा था, "हाल्ट हू कम्स देयर" और जब उसकी जाँच की गई तो वह तुम्हारा साथी स्काउट निकला। भइया मुझे तो बताओ यह क्या खेल था?

प्रकाश—अच्छा तुमको पहरे का हाल बताया गया है। तुम जानते ही हो कि हमें स्काउटिंग में सब मर्दानगी के काम सिखाये जाते हैं। हमें सूनसान अंधेरे में पहरा देना भी बताया जाता है। जब हम लोग पहरा देते हैं तो कुछ ऐसे खेल खिलाये जाते हैं जिनके द्वारा हम लोगों में चुस्ती, चालाकी और चौकन्नापन पैदा होते हैं। उस दिन पहरा लगने से पहले हमारे छः चालाक स्काउटों की एक टोली बाहर निकाल दी गई। उनसे कह दिया गया कि जिस तरकीब से हो सके वे शिविर के अंदर दाख़िल हो जायें और हम पहरेदारों से

कह दिया गया कि ऐसे चौकन्ने रहें कि कोई भी बाहरी आदमी शिविर के अन्दर दाखिल न होने पाये। जब मैं पहरे पर था तो मैंने अँधेरे में एक काले कुत्ते को इधर-उधर सूँघते साँघते और आते जाते देखा। यह कुत्ता धीरे धीरे मेरी तरफ़ उसी तरह बढ़ने लगा। मैंने भी यह समझ कर कि वास्तव में कुत्ता है, कुछ ध्यान न दिया। अब यह कुत्ता मेरे नज़दीक एक पेड़ के पास आ टाँग उठा कर पेशाब करने लगा। इतने में मैंने ताड़ा कि उस कुत्ते की टाँग पेशाब करते समय वैसे नहीं उठी जैसे कि आम तौर पर होता है और मैंने यह भी देखा कि उस कुत्ते की दुम बिलकुल सीधी खड़ी थी और ज़रा भी मुड़ती मुड़ाती नहीं; तो मैं ताड़ गया कि कुछ दाल में काला है। मैंने फ़ौरन कड़क कर कहा, "हाल्ट हू कम्स देयर।" नज़दीक जाकर देखा तो पाया कि लाला श्याम-बिहारीलाल कुत्ते का भेष बनाये शिविर में दाखिल हुआ चाहते हैं। मैंने उनको पकड़ लिया और क्वार्टरगार्ड के हवाले कर दिया।

तेजू—अरे बाप रे! यह तो बड़ा मुश्किल खेल है!!

प्रकाश—मुश्किल उश्किल कुछ नहीं है! बस इसमें सावधानी की बड़ी ज़रूरत पड़ती है। हमारे मास्टर साहब ने इसी सम्बन्ध में एक बड़ा दिलचस्प क़िस्सा सुनाया। क़िस्सा यों है:—किसी एक अँगरेज़ बहादुर और चोर में बहस हुई। चोर ने कहा कि चाहे कितना कड़ा पहरा आप लगाइए, चाहे जहाँ आप अपना डेरा डालिए, मैं, जिस दिन आप कहें, उसी दिन आपकी चोरी करूँगा। साहब ने भी स्थान और दिन बद दिया।

साहब ने अपना कैम्प खुले मैदान में एक दरिया के किनारे लगाया और निश्चित दिवस पर चारों तरफ़ पुलिस का बड़ा कड़ा पहरा लगा दिया। उस चोर ने क्या चालाकी की कि उस दरिया में थोड़ी थोड़ी देर बाद घास के पूले बहाने लगा। पहरेवाले देखते रहे कि कहीं से घास के पूले बहते चले आ रहे हैं। जब रात बीतने लगी तो एक घास के पूले में वह चोर भी बहता चला आया।

वह पूला किनारे पर आकर लग गया। चोर पूले से निकल कर तम्बू के अन्दर गया और साहब को पिस्तौल की नोक पर जगाया। साहब बहादुर डरते हुए उठे। चोर ने साहब के मुँह में कपड़े का गूँभा ठूँसकर उनके हाथ पैर चारपाई से बाँध दिये और उनकी नक़दी को अपने टेंट में लगा उसी पूले के सहारे नौ दो ग्यारह हो गया। जब सुबह को लोगों ने साहब को इस दशा में देखा तो उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ। जाँच करने से पता लगा कि उन घास के पूलों को चोर ने ही बहाया था और इसी ढँग से उसने अपनी बात को पूरा किया। इसी लिए हम स्काउट लोग पहरे के वक्त हर चीज़ की चाल ढाल और आवाज़ को ध्यानपूर्वक देखते और सुनते हैं, और उनसे नतीजा निकाल कर मुनासिब अमल किया करते हैं।

तेजू—ये तो बड़ी अच्छी बातें हैं; अबके मैं भी कैम्प को चलूँगा।

श्रीराम वाजपेयी
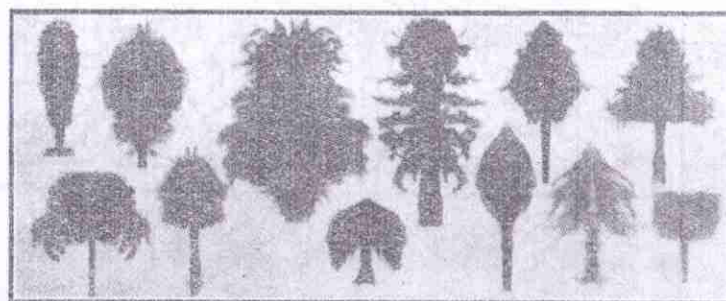
स्याही के धब्बे

स्याही के धब्बों से बने हुए कुछ पेड़ों के चित्र।

भूलभुलैया
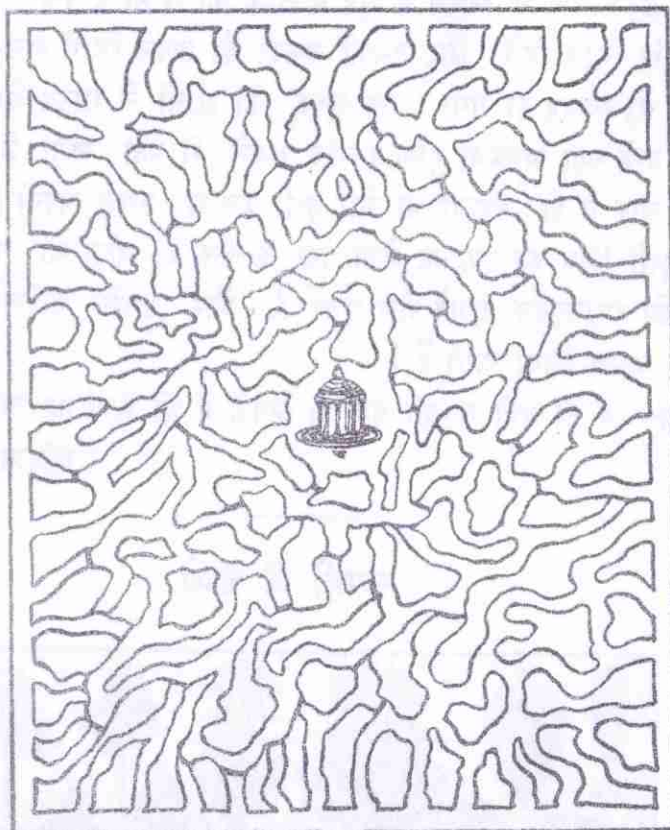
इस मन्दिर में जाने के बहुत से रास्ते हैं। पर जाने वाले यह चाहते हैं कि जो सबसे छोटा रास्ता है वह मिल जाय तो अच्छा। बालको क्या तुम वह रास्ता ढूँढ़ सकते हो? जो भीतर से बाहर की तरफ़ चलेंगे उनको शायद यह रास्ता जल्दी मालूम हो जाय।

क्या जानवर हँसते हैं ?

इस लेख का शीर्षक देखकर लड़के हँसेंगे कि भला जानवर कहाँ हँसते हैं ? ठीक है, उन्होंने शायद ही कभी किसी जानवर को हँसते देखा हो ! स्वयं लेखक को किसी जानवर को हँसते देखने का कभी मौक़ा नहीं मिला। अभी उस दिन एक पुराने पत्र की फाइल उलट रहा था, उसमें जानवर के हँसने की एक घटना लिखी थी उसी घटना को हम 'बाल-सखा' के प्रेमी पाठकों के सामने रख रहे हैं।

यह घटना अमेरिका देश की है। वहाँ के एक शहर में एक दुकानदार के पास एक बिल्ली का बच्चा था। जिस प्रकार भालू पिछले दो पैरों के बल खड़ा हो जाता है, उसी तरह उस दुकानदार ने बिल्ली के बच्चे को पिछली दो टाँगों के बल खड़ा होना सिखाया था। जब गाहक उसकी दुकान पर सौदा ख़रीदने को आते तो वह बिल्ली के बच्चे को पिछली दोनों टाँगों के बल खड़ा होने के लिए कहता। लोग कौतूहल से उस तमाशे को देखते। एक दिन कोई बड़ा आदमी एक बड़ा भारी कुत्ते को साथ लेकर कोई चीज़ ख़रीदने के लिए उसी दुकान पर आया। बिल्ली का बच्चा उस कुत्ते के लम्बे डील डौल और लाल लाल दोनों आँखों को देखकर सन्न हो गया। भला ऐसे बड़े कुत्ते को देखकर कौन ऐसा है, जो डर न जाय ? किन्तु वह बिलकुल डर न गया। वह कुछ पीछे हट कर फिर दोनों टाँगों के बल खड़ा हो सामने के दोनों पंजों को उठा कर पहलवानों की तरह कसरत करने लगा मानों कुत्ते को लड़ने के लिए ललकार रहा हो। बिचारे कुत्ते ने कभी ऐसा दृश्य नहीं देखा था।

वह टकटकी लगा कर बिल्ली के बच्चे की कसरत देखने लगा। अन्त में हँसने जैसा एक प्रकार का शब्द किया। वह कुत्ते के भूकने, डर वा ग़ुस्से का शब्द न था। उसी क्षण उसका चेहरा और आँखें खिल उठीं। जिन्होंने उसे

देखा, उन्होंने समझा कि कुत्ता हँस रहा है। जान पड़ता है, कुत्ते ने अपने मन में सोचा हो, "यह क्या ? बिल्लियाँ तो इस तरह नहीं बैठतीं, यह किस दुनिया की बिल्ली है ? मुझे यह अपनी कसरत दिखा रही है, अगर अभी दौड़ कर इसकी गरदन दबा दूँ तो फिर इसकी कसरत और इसकी हस्ती भी न रह जाय।" यही सोच कर वह हँसा हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

गणेश पांडे

बहिन की चिट्ठी

प्यारे भाई,

तुमको किस बात का गौरव है ? केवल इस बात का कि तुम बहुत खिलाड़ी हो। खेलना तो बहुत अच्छा है पर आश्चर्य इस बात का है कि पाठशाला को जाते समय तुम्हारा उत्साह फीका क्यों पड़ जाता है ? तुम्हारे चेहरे पर शनिवार की शाम को जो ख़ुशी रहती है वह सोमवार की सुबह को देखने में नहीं आती ?

कल जब स्कूल जाने का समय आया तो तुम चादर तान कर पड़ गये और बुखार आने का बहाना बना लिया। किन्तु दोपहर को जब तुम्हारे साथी आये तब उनके साथ ताश खेलते समय तुम्हारा बुख़ार न जाने कहाँ चला गया ?

शाम को खेल के मैदान में तुम मना करने पर भी गेंद लेकर भग गये और जब वहाँ जीत हुई तो हँसते हुए घर आये और बड़ी प्रसन्नता से खाने बैठे। किन्तु तुम अपनी सारी प्रसन्नता भूल गये और आधे खाने पर से ही

उठ गये जब तुमने सुना कि मास्टर ने कल इतवार को भी पढ़ने को बुलाया है ?

आज पाठशाला जाना पड़ा। छुट्टी के समय तुम रोते हुए इसलिए आये क्योंकि घर के लिए दिये हुए काम को पूरा न करने के अपराध में मास्टर ने तुमको पीटा है। रोते हो किन्तु अगले दिन छुट्टी होने के कारण मन में ख़ुशी है। झटपट बस्ता पटक कर और जहाँ तक हो जल्दी खाकर खेलने जाने की जल्दी करते हो। किन्तु पिताजी से यह सुनकर कि खाना खाने के बाद थोड़ा आराम करके मेरे पास सबक़ सीखने आना, तुम्हारी सारी आशाओं पर पानी पड़ गया। मास्टर साहब की मार का दरद पिताजी के इस वाक्य से दूना हो गया। ज्यों त्यों बहुत मनाने पर धीरे धीरे खाना खाया। कुछ देर में बस्ता उठाया और मन मार कर पढ़ने बैठे।

खेल में जब तुम्हारे चोट लग जाती है तो उसे कुछ भी नहीं गिनते हो। उस दिन तुम्हारे बायें हाथ का अँगूठा घायल हो गया तो तुमने कितना हँस हँस कर उसका वर्णन किया कि मैं तुम्हारे धैर्य्य की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकती।

तुम्हें चाहिए इसी तरह का प्रेम पढ़ने-लिखने में भी दिखलाओ। जिस प्रकार खेल की चोट को हँस कर टाल देते हो उसी प्रकार पढ़ने की कठिनाइयों को भी सरल समझो। खेलना भी आवश्यक है और पढ़ना उससे अधिक। पढ़ना, खेलना दोनों को अपनाओ। खेलने से शरीर बनता है और पढ़ने से मन। शरीर और मन दोनों बनाने की ज़रूरत है।

तुम्हारी बड़ी बहिन

सावित्रीदेवी गर्ग

इन्द्रधनुष

इन्द्रधनुष है रङ्ग रँगीला,
चोखा, चमकदार, चटकीला।
लाल, बैंगनी, नीला, काला,
हरा, गुलाबी, बड़ा निराला॥
मनो किसी ने खींच दिया है,
उस पर रँग भी सींच दिया है।
या है मोर पङ्ख का जाला,
या है रंग-बिरंगी माला॥
या अमृत विष मिला हुआ है,
नील कमल सा खिला हुआ है।
अथवा मोर वहाँ पहुँचे हैं,
पङ्ख खोलकर ख़ूब नचे हैं॥
या फट गई किरन सूरज की,
फैली रंग-बिरंगी रज सी।
अथवा है यह कण्ठ गगन का,
बादल की गड़ गड़ से ठनका॥
निकल पड़ा है आज अचानक,
पट्टी बँधी हुई उसमें इक।
दिखती है वह रंग-बिरंगी,
पीली कुछ, सफेद, नारंगी॥

'लहरी'

———
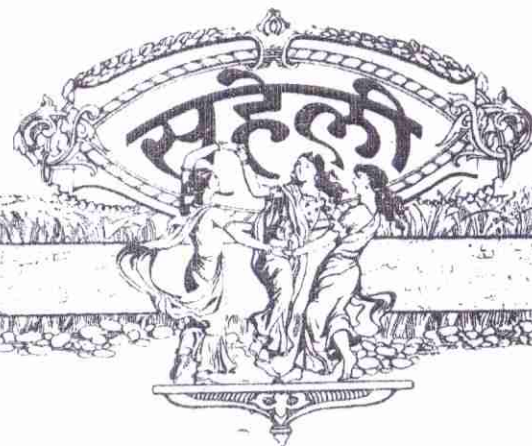
देशभक्ता जोन

लगभग पाँच सौ वर्ष पहले, फ़्रांस देश के एक छोटे गाँव में जोन नाम की एक छोटी लड़की रहती थी। वह कभी कभी गाँव के पास जो बड़ा [illegible] था वहाँ अपने भाइयों के साथ जाकर खेला करती थी। जब वह सयानी [illegible], वह घर के काम-काज में अपनी मा की मदद करती और खेत में जाकर [illegible] और भेड़ चराया करती।

बहुत दिनों के बाद जोन ने यह सुना कि उसके देश में एक बड़ा घोर युद्ध [illegible] रहा है। कई साल, अँगरेज़ फ़्रेंच से लड़ रहे थे। बेचारे फ़्रेंच बहुत दुःख [illegible]। इनका राजा बड़ा कमज़ोर था। इसलिए अँगरेज़ों ने फ़्रेंच को हरा दिया [illegible] उनके देश का बड़ा भाग अपने अधीन कर लिया। फ़्रेंच डरते थे कि कहीं [illegible] सारा देश न जीत लें।

यह सब सुनकर जोन का मन देश-भक्ति से भर गया। दिन भर वह [illegible] देश की हालत पर सोचती थी और रात को उसी पर स्वप्न देखती थी।
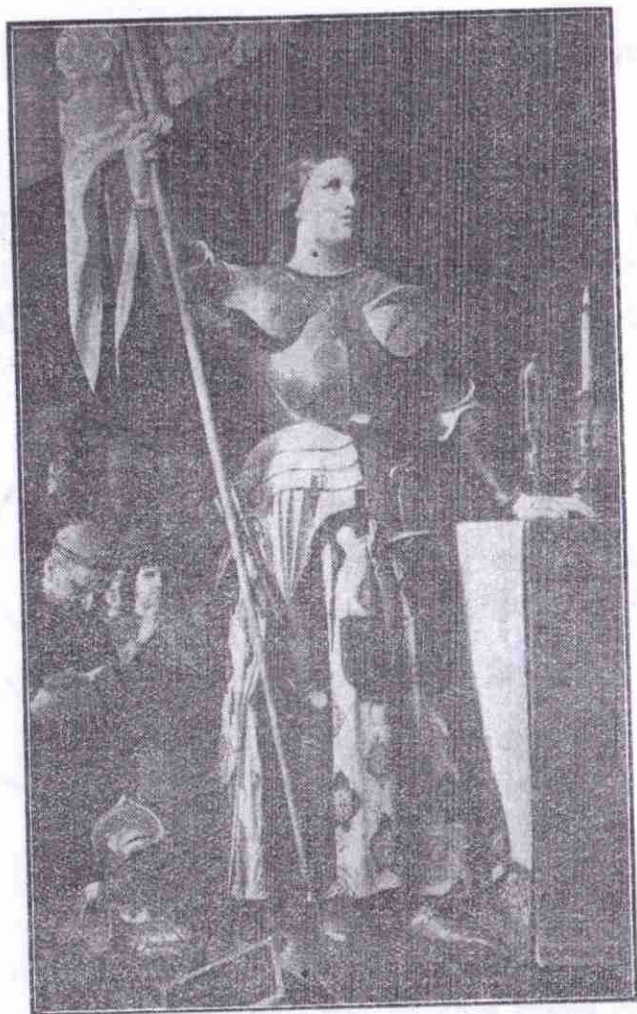
देवी जोन

एक रात एक देवता ने जोन से कहा कि तुम खुद जाकर, फ्रेंच-सिपाहियों की मदद करो। पहले जोन ने सोचा कि वह किसी तरह की देश-सेवा नहीं कर सकेगी, उसने आखिर को, राजा के यहाँ जाना निश्चय किया। यह सुनकर जोन की सखियाँ उसकी हँसी उड़ाने लगीं।

जोन राजा के यहाँ गई। राजा ने जोन की बातें नहीं मानीं और उसने कहा—"तुम कैसे हमारी मदद करोगी? क्या तुम घोड़े पर से लड़ सकती हो?

जोन ने कहा—"महाराज! यदि ईश्वर की इच्छा हो तो, मैं सब कर सकूँगी। उनकी इच्छा यह है कि मैं आपकी और देश की मदद करूँ और आप युद्ध में विजयी हो जायँ।"

राजा ने उसको लड़ने के वास्ते एक सफ़ेद झंडा, एक लोहे का कवच और एक सफ़ेद रंग का घोड़ा दिया और उसको एक सेनापति का स्थान दिया। सिपाही लोग जोन को देवता मान कर, धीरज धर कर लड़ने लगे और उन्होंने कई लड़ाइयों में अँगरेज़ों को हराया। अँगरेज़ भाग गये और राजा बहुत खुश हुआ।

तब जोन ने राजा के यहाँ आकर कहा—"महाराज! अब मुझे अपने मा-बाप के यहाँ जाने दीजिए। मेरा काम पूरा हुआ है।"

परन्तु राजा ने उसे जाने न दिया। जोन फिर कई बार लड़ती रही। आखिर एक फ्रेंच अगुए ने जो राजा का दुश्मन था, जोन को पकड़ कर उसे अँगरेज़ों के हवाले कर दिया, अँगरेज़ उसे पकड़ कर बहुत खुश हुए और उन्होंने एक वर्ष तक उसे जेल में रखा। अँगरेज़ों में सब उसे जादूगरनी कहते थे। परन्तु उसने यही उत्तर दिया कि मैं गाँव की एक सीधी सादी लड़की हूँ। ईश्वर ही ने मेरी मदद की। आखिर को अँगरेज़ों ने देशभक्ता जोन को जला दिया।

जोन ने अपने देश के लिए अपना घर-द्वार सुख-दुःख छोड़ कर, अपनी देह अर्पण कर दी थी। उसकी देश-भक्ति कभी किसी को भूल नहीं सकती।

नरसिंह लक्ष्मीदेवी

मुन्नी का सीना
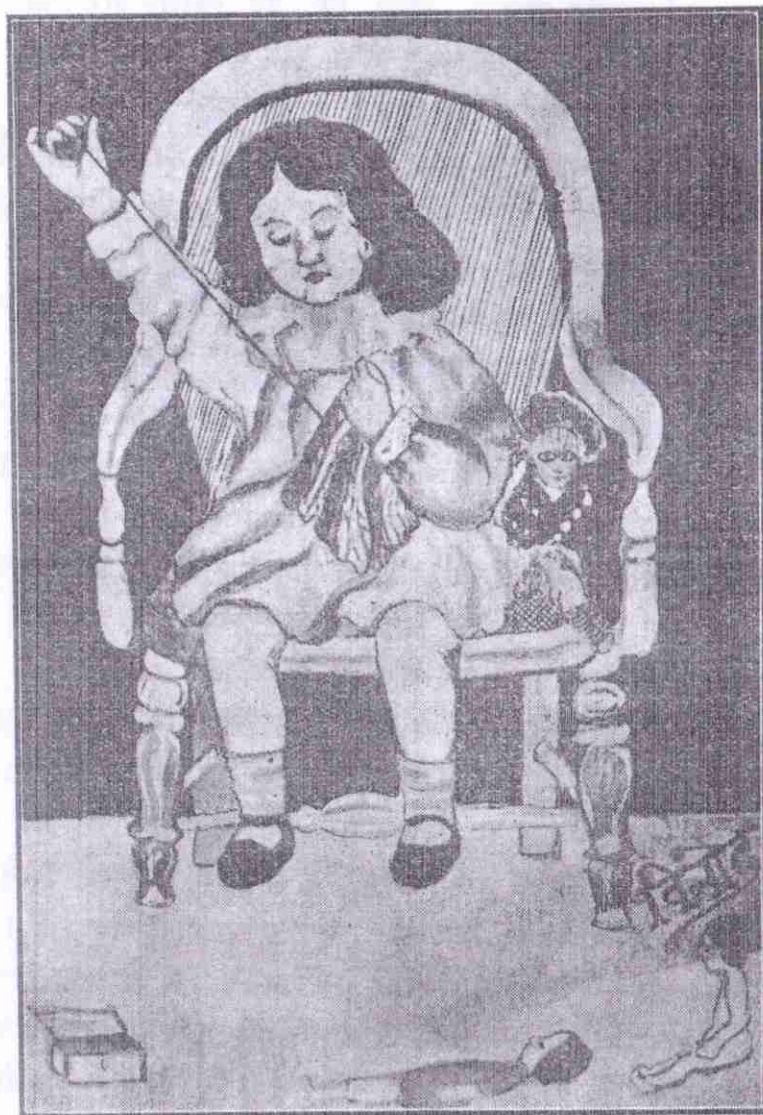
नहीं फुलावेगी जो गाल । दूँगी उसको यह रूमाल ॥

रोटियों का खेल

तारा ने पूछा—"भाभी, तुम हमेशा गोल रोटियाँ बनाती हो और तरह की क्या तुमसे नहीं बनतीं ?

भाभी ने जवाब दिया—"और तरह की बनाऊँ तो लोग हँसने लगें और [illegible] कि तारा की भाभी को रोटी पकानी नहीं आती । गोल रोटियाँ देखने में [illegible] लगती हैं और चूल्हे के भीतर उनको पहिये की तरह घुमा कर खूब [illegible] तरह सेक सकते हैं । इसलिए सभी के घर में गोल रोटियाँ बनती हैं ।
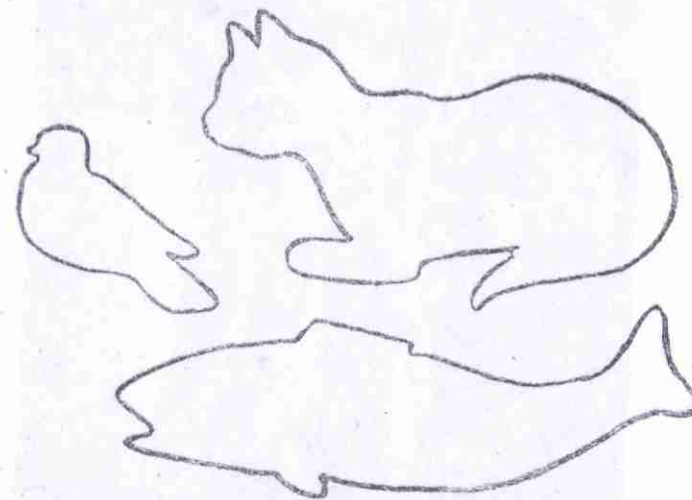
[illegible] जब छोटी सी थी और अपनी माँ के घर थी तो लम्बी, टेढ़ी, चौकोर [illegible] तरह की रोटियाँ बनाने का खेल खेला करती थी ।"

तारा बोली—"कुछ मुझे भी सिखाओ ।"

भाभी ने कहा—"अच्छा एक मोटा और साफ़ कागज़ ले आओ ।"

तारा काग़ज़ ले आई। भाभी ने उस पर पेंसिल से कुछ खींच कर पूछा—"बोलो क्या बना ?"

तारा ने जवाब दिया—"एक बिल्ली, दूसरी मछली, तीसरा कबूतर।"

भाभी ने कहा—"हाँ, कैंची से तीनों को काट लो।

अब एक बड़ी सी रोटी बेलो। उस रोटी पर इन कटे हुए टुकड़ों को रखो और साफ़ चाकू से उन्हीं के आकार की रोटियाँ काट कर सेंक लो। इस तरह तुम जिस जिस शकल की चाहो रोटी बना सकती हो ?"

तारा ने उस दिन अजीब अजीब शकल की रोटियाँ बनाईं।

बालिकाओ ! क्या तुमने भी कभी ऐसी रोटियों का खेल खेला है ?

जयदेवी

बाल-राजकुमारी
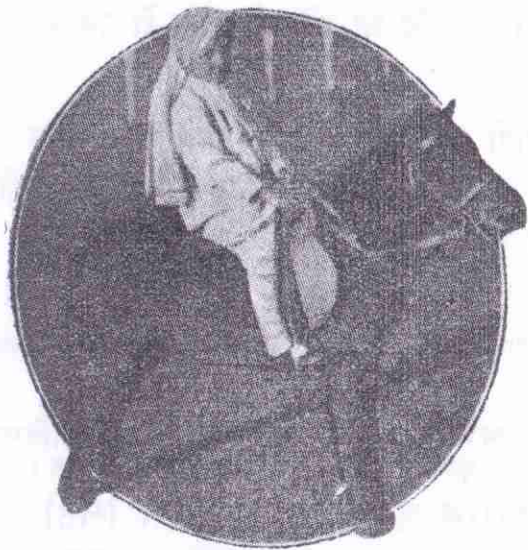
यह विजयानगरम की बाल राजकुमारी का चित्र है। राजकुमारी घोड़े की सवारी में बड़ी होशियार हैं। अभी हाल में गर्मी के दिनों में ये ऊटकमंड गई थीं। वहाँ एक घुड़दौड़ हुई थी जिसमें आप भी शामिल हुई थीं। इस बाल राजकुमारी को निडरता के साथ घोड़ा दौड़ाते देखकर सब लोग चकित हो गये।

१—एक स्त्री रोज़ अच्छे अच्छे भोजन बनाती और अपने वास्ते चूल्हे में रख छोड़ती और रूखी सूखी रोटी बड़े प्यार दुलार से लड़कों को खिलाती। जब लड़के कहते—"माँ तू भी खा" वह कहती—"माँ पड़ै चूल्हे में तुम तो खावो"। एक दिन बच्चों को यह रहस्य मालूम होगया। फिर क्या था, चुपके से सब खा कर चल दिये। जब लौटकर घर आये तो माँ से रोटी माँगी और कहा—"माँ, तू भी खा। उसने उसी तरह उत्तर दिया, बेटा तुम खालो, माँ पड़े चूल्हे में"। एक लड़का झट बोल उठा—"चूल्हे के भरोसे मत रहना, आज उस चूल्हे में हम सब पड़ गये हैं"।

२—एक बार डिप्टी साहब ने एक से यह प्रश्न किया—"बताओ, तुम्हारे नाना का दामाद तुम्हारा कौन हुआ" ? लड़का बड़ी देर तक सोचता रहा किन्तु उसकी समझ में कुछ न आया। अन्त में बोला—"ऐसा संबंध हमारे यहाँ नहीं होता"। डिप्टी साहब हँस पड़े।

३—किसी ने एक दिल्लगीबाज़ से पूछा—"क्यों जनाब ! आपके सिर के बाल तो सफ़ेद हो गये पर डाढ़ी काले कौवे की तरह क्यों वैसी की वैसी ही काली है। दिल्लगीबाज़ ने जवाब दिया "भाई साहब ! यह बीस वर्ष छोटी है"।

४—एक बहिरे आदमी से किसी ने रास्ते में कहा—"भाई साहब ! रा[illegible] राम !!" उसने कहा—"बाज़ार से आये हैं" । पूछा—"चित्त प्रसन्न है" [illegible] कहा—"बैंगन लाये हैं" । पूछा—"बाल बच्चे अच्छे हैं ?" कहा—"आज रा[illegible] को सबका भरता बनाऊँगा" ।

५—एक लड़का परीक्षा में फेल होगया । लोगों ने उससे पूछा, "तु[illegible] फेल क्यों होगये ?" उसने कहा, "जो बातें आदमी जीवन में देखता है, वह तो या[illegible] ही नहीं रहतीं; परीक्षा लेनेवालों का अँधेर तो देखिए । मुझसे पैदा होने के पह[illegible] हज़ारों वर्ष की बातें पूछी थीं, असल में ये बातें तो हमारे बाप-दादा, परदाद[illegible] नगड़-दादा से पूछनी थीं" ।

६—एक पटवारी रास्ते रास्ते चला जाता था, कहीं उसका क़लम ब[illegible] से गिर पड़ा । एक आदमी ने उठाकर कहा—"लाला साहब ! आप की छुरी गि[illegible] गई है" । लाला ने कहा—"वाह साहब ! क़लम को छुरी बताते हो" । उस पर उ[illegible] आदमी ने कहा, "जाइए बातें न बनाइए, इससे आपने कितनों के गले काटे होंगे" [illegible]

७—एक मनुष्य से किसी दोस्त ने पूछा—"क्यों जी ! तुम्हारे कितने लड़के हैं [illegible]" उसने कहा—"मेरे चार पुत्र हैं, एक का नाम गंगा, दूसरे का नाम यमुना, ती[illegible] का नर्मदा, चौथे का ब्रह्मपुत्र । और तीन पुत्रियाँ भी हैं, उनमें से एक का ना[illegible] गोमती, दूसरी का गोदावरी, तीसरी का सरस्वती है" । दोस्त ने कहा—"अब[illegible] यदि पुत्र हो तो उसका नाम 'सागर' रखना, सब कसर पूरी हो जायगी ।

८—एक आदमी बकरी का बच्चा लिये जाता था । बच्चा चिल्लाता था [illegible] एक पाठशाला के लड़के ने पूछा—"इस बकरी को कहाँ लिये जाते हो" [illegible] उसने कहा—"बलि देने को" । लड़का बोला—"यह बकरी बड़ी मूर्ख है जो इ[illegible] प्रकार चिल्लाती है । हमने समझा था कि इसे मदर्से में पढ़ाने लिये जाते हो [illegible] इसमें अलबत्ता उसे दुख होता" ।

बुद्धिसागर वर्मा, विशारद, बी० ए० यल० टी[illegible]

कुछ इधर उधर की

१—आदमी क्यों मरते हैं ?

आदमी के मरने का सबसे बड़ा कारण रोग है । बिना भूख के खाने से और गंदी हवा में साँस लेने से या इसी तरह के और किसी [illegible] से रोग हो जाता है । लेकिन अगर रोग न हो तब भी आदमी मर [illegible] है । पर विद्वानों का कहना है कि उस मरने को मरना न कहना चाहिए । [illegible] मौत तो संसार को नया बनाने के लिए होती है । अगर मौत न हो तो यह [illegible] आदमियों से इस तरह भर जाय कि जो नये लोग पैदा हों उनको खड़ा [illegible] की भी जगह न मिले ।

या यों कहिए कि पुराने लोगों की मौत न हो तो बच्चों का जन्म ही [illegible] हो सकता और बिना बच्चों के दुनिया में रहने में कोई मज़ा नहीं । [illegible] लिए भगवान ने मौत बनाई है ।

बीज ! बीज ! बीज !

आज ही आर्डर भेजिये । चमकीले खुशबूदार फूलों के बीज ३); स्वादिष्ट [illegible]कारियों के बीज ३); दोनों एक साथ लेने से ५); रङ्गीन सूची-पत्र मुफ़्त ।

श्रीसीताराम कृषिशाला, बनारस सिटी ।

२—हाथी की लड़ाई

पुराने ज़माने में लोग हाथी की लड़ाई अक्सर देखते थे। जब हाथी लड़ते हैं तो एक दूसरे की सूँड़ से सूँड़ खूब लपेट लेते हैं। खूब चिंघाड़ते हैं। देखने वाले दूर से तमाशा देखते हैं। अभी हाल में मदरास में हाथियों की लड़ाई दिखाई गई थी। ऊपर उसी का चित्र दिया जाता है।
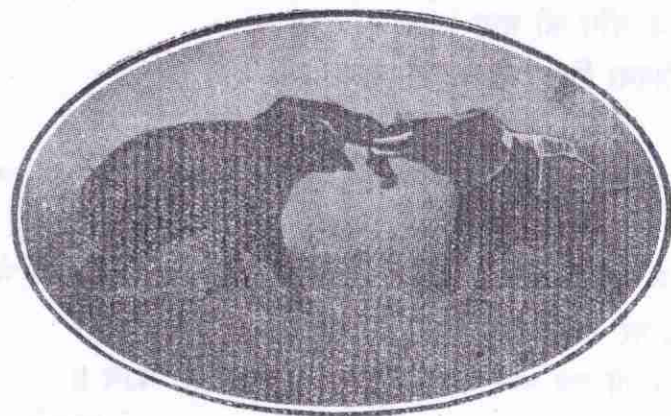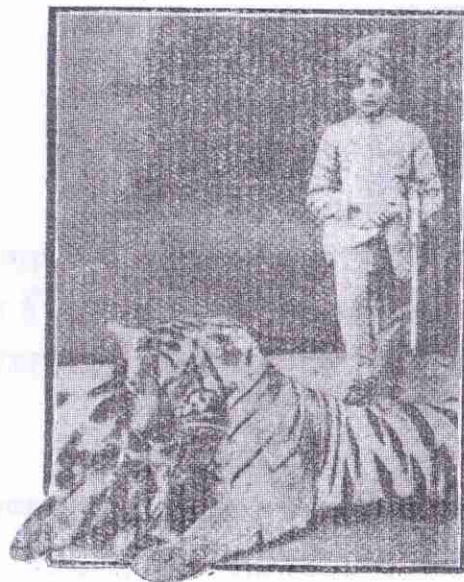
३—शेर का शिकार

पन्ना के बाल-राजा ने अभी हाल ही में इस शेर का शिकार किया है। आपको शिकार खेलने का बड़ा शौक है।

हमारी डाक

हमारे छोटे दोस्तो !

एक बालक ने दो महीने हुए लिखा था कि हमारा पता बदल दो। [illegible] चिट्ठी में अपना नाम तक नहीं लिखा था। इधर आपकी चार पाँच चिट्ठियाँ [illegible] हैं। किसी में लिखा है—आप पता क्यों नहीं बदलते ? किसी में लिखा है—जवाब क्यों नहीं देते ? किसी में हमें गाली भी लिखी है। पर अपना नाम [illegible] चिट्ठी में नहीं लिखा। मुहर से जान पड़ता है कि आप लाहौर के हैं। [illegible] बालको ! तुम सब ज़रा सोचो तो कि इन गुमनाम महाशय को जवाब कैसे [illegible] जाय ? पता कैसे बदला जाय ?

× × × +

ख़ैर ऐसे तो बहुत से हैं जो अपना नाम और पता लिखना भूल जाते हैं। कुछ ऐसे भी अक़्ल के पूरे लोग हैं कि चिट्ठी पर पानेवाले का पता नहीं लिखते और उसे डाक-बम्बे में डाल आते हैं। अभी उस दिन हमारे [illegible] घूमती घामती एक ऐसी ही चिट्ठी आई। ऊपर पता नहीं था। भीतर केवल [illegible] जगह 'बाल-सखा' लिखा था। उसी के सहारे डाकखानेवालों ने उसे हमारे [illegible] पहुँचा दिया था। लेकिन हमें विश्वास है कि हमारे बाल-सखा के तुम सब [illegible] ऐसे नहीं हो। तुममें से बहुतों की चिट्ठियाँ हमने पढ़ी हैं और हम यह [illegible] के साथ कह सकते हैं कि हमारे छोटे पाठक अगर जी लगा कर चिट्ठियाँ [illegible] तो सबसे अच्छा लिख सकते हैं। मगर..........।

मगर हमें यह कहना ही पड़ता है कि तुममें से कुछ ऐसे ज़रूर [illegible] जो बड़ी लापरवाही से जल्दी जल्दी घसीट कर काम खतम कर [illegible] हैं। पर हम भी बड़े चालाक हैं। इस बार जितने लोगों ने [illegible] कर चिट्ठियाँ लिखी थीं उनको पहचान लिया। तुम देखोगे कि इस [illegible] पहेलियों के जवाब देनेवालों में बहुत कम बालकों के नाम छपे हैं। बात [illegible] हुई कि जैसे उन्होंने हमारी पहेलियों के जवाब लिखने में लापरवाही की [illegible] हमने भी उनके नाम छापने में लापरवाही कर दी। अब वे अगर हमारे [illegible] नाम न छापने के लिए बिगड़ेंगे तो हम भी उनके ऊपर बनाकर जवाब [illegible] लिखने के लिए बिगड़ेंगे ? क्यों ?

× × × ×

लेकिन हम आपस में बिगाड़ नहीं करना चाहते। बिगाड़ करने से, हमारे देश का बड़ा नुक़सान हुआ है। और हम बालकों को तो ख़ूब ही मेल से रहना चाहिए क्योंकि आगे हमीं लोगों को अपना देश सँभालना है। और मेल से रहेंगे तभी मज़े से सब काम चलेगा। इसलिए हे बिगाड़ कर चिट्ठी लिखनेवाले दोस्तो! मान जाओ! अब तक जो हुआ सो हुआ आगे से बनाकर चिट्ठियाँ लिखो।

× × × ×

जगह बहुत कम रह गई है। इसलिए ज्यादा नहीं लिखेंगे। पर एक बड़ा टेढ़ा सवाल सामने आ खड़ा हुआ है। उसमें तुम सबसे मदद लिये बिना काम न चलेगा।

दिल्ली में हमारे एक पाठक हैं—मुन्नालाल कपूर! वे हमको बार बार लिख रहे हैं—"हमारा नाम बदल कर दुर्गाप्रसाद कर दीजिए। मुन्नालाल मेरा प्यार का नाम है। मेरा असली नाम दुर्गाप्रसाद है।" अब बताइए प्यार का नाम अच्छा या बे-प्यार का नाम अच्छा। प्रिय मुन्नालाल तुमको क्या सूझी है। मेरी राय में तो तुम्हें अपना प्यार का ही नाम रखना चाहिए। बालको! अगर तुम्हें हमारी बात पसन्द हो तो प्यारे मुन्नालाल को तुम भी कुछ सलाह दो। शायद मान जाय।

× × × ×

इस बार जिन बालकों को पुरस्कार मिला है, उनके जवाब पहले नहीं आये थे, बल्कि उन्होंने पुरस्कार जीता है। उनके जवाब सही थे और लिखावट साफ़ और सुन्दर थी। आइन्दा इन्हीं दो बातों पर ध्यान दिया जाया करेगा। अभी बहुत सी बातें लिखने को छूटी जा रही हैं। पर अब स्याही खतम हो गई इसलिए यहीं समाप्त करते हैं। इति।

तुम्हारा दोस्त—
सम्पादक

प्रश्न-पहेली

एक घड़ी इनाम!

१—एक सींग की गाय।
जितना खिलाओ उतना खाय॥

श्रीशचन्द्र पोद्दार

जो लड़के लड़कियाँ इस पहेली का जवाब देंगे उनमें से सर्वप्रथम को श्रीशचन्द्र पोद्दार (कलकत्ता) की ओर से एक बढ़िया घड़ी इनाम में मिलेगी। मगर शर्त यह है कि उनकी आयु १० वर्ष से कम हो और वे अपने गार्जियन से दस्तख़त कराकर जवाब भेजें।

२—(क) मुँह पर रक्खे अपने हाथ। बोला करती हूँ दिन-रात।
हो जाती जब बन्द जबान। लोग ऐंठते मेरा कान॥

प्रेमदुलारे

(ख) मैं पक्षी मीठा मेरा स्वर।
उलट पढ़ो तो बनता बन्दर॥

जयन्ती देवी पांडे

(ग) गई कलकत्ता गई बनारस गई वन और झाड़ी।
गई पहाड़ पर आई नीचे फिर ठाढ़ी की ठाढ़ी॥

श्रीमती पारुलबाला बैनर्जी

(घ) मैं एक चीज़ हूँ जिसके सेवन से जीव चिल्ला उठता है। मेरा पहला अक्षर एक पीने की चीज़ है। जब मेरे पहले और तीसरे अक्षर मिल जाते हैं तो एक ऐसी चीज़ बनाते हैं जिसके बग़ैर कुम्हार का काम नहीं चल सकता बताओ मैं कौन हूँ?

सच्चिदानन्द सहाय

इन चारों पहेलियों के जवाब बूझनेवालों में सर्वप्रथम को १ सुन्दर पुस्तक इनाम मिलेगी। आयु १५ वर्ष से कम हो।

पुरस्कार २)

३—नीचे एक अँगरेज़ी का जुमला दिया जाता है। इसमें 'ए' से 'जेड' तक अँगरेज़ी के सब अक्षर आ गये हैं। ऐसा ही दूसरा वाक्य जो लिख कर भेजेंगे उन्हें २) पुरस्कार मिलेगा। उम्र की क़ैद नहीं है।

PACK MY BOX WITH FIVE DOZEN OF LIQUOR JUGS.

अगस्त सन् १९२८ की पहेलियों के उत्तर

(१) मसहरी (२) बकरी (४) २१९ २७३ ३२७
४३८ ५४६ ६५४
६५७ ८१९ ९८१

निम्न लिखित को एक एक पुस्तक इनाम मिली—

(१) ब्रजभूषणप्रसाद नायक, बिळहरी (जबलपूर), (२) विश्वनाथ टण्डन, कानपुर

निम्न लिखित की हम बड़ी प्रशंसा करते हैं क्योंकि इनके अधिकांश जवाब ठीक थे और लिखावट साफ़ तथा सुन्दर थी:—

जयदेवी, मथुरा। हरिश्चन्द्रराय, दारागन्ज। विश्नराम मेहता, एलगिन रोड। शिव-नन्दन ऋषि, श्रीनगर। श्यामनारायण श्रीवास्तव, बाई का बाग। श्रद्धानन्द मित्तल, मेरठ। शमशेर बहादुरसिंह, देहरादून। विद्यावती, कलकत्ता। विजयानन्द, मिर्ज़ापूर। श्रीशचन्द्र प[illegible], कलकत्ता। मनुसुखलाल सुनार, गोटेगांव। आनन्दीलाल दर्ज़ी; करेलीगञ्ज। कुमार रणवीरसिं[illegible] खड़गपूर। अन्नपूर्णादेवी, छपरा। केदारनाथ मोदी, मधुपुर। सावित्री देवी, अहरौरा। श्यामादे[illegible] रतसंड। कुँवर खड़गसिंह, खैरहा। प्रभाकर, पीलीभीत। नानकचन्द, सोहागपूर। हरीश[illegible] बाँस बरेली। बल्लूसिंह, सागर। जी० पी० श्रीवास्तव, गोरखपुर। कामेश्वर तिवारी, बनारस। नागमती देवी, लहुँआ। कल्याणमल टोंग्या, हाटपीपल्या। जगदीशचन्द्र सिंघल, अलीगढ़। ताराप्रसन्न सरकार, कटनी। सुशीलादेवी, मुरादाबाद। इन्दुमती, चौबेपुर। दारोग़ा खाँ, जम[illegible]पुर। शब्दप्रकाश, बस्ती। गोपली बाई, देवघर। विद्यावती, नारनौल। शारदादेवी, बहावलपुर।

Printed and published by K. Mittra, at The Indian Press Ltd., Allahabad.